RENAISSANCE (PART-1).

(पुनर्जागरण)

For:B.A.Part-1,Paper-2

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है- फिर से जागना किंतु यह किसी सोए हुए व्यक्ति की निंद्रा से जागना नहीं बल्कि इसका आशय समस्त मानव के जागृत होने से है। वस्तुतः 14 वी से 16 वीं सदी के यूरोप में रूढ़िवादी तथा प्रतिक्रियावादी परंपरा का अंत कर उसकी जगह नई चेतना को, नए जागरण एवं बोध को स्थापित किया गया उसे ही यूरोप में पुनर्जागरण कहा जाता है।

- यूरोप में - छठी शताब्दी ईसा पूर्व यूनानी, रोमन साम्राज्य में सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, पाइथागोरस जैसे अनेक विचारकों ने मानव विकास के अनेक आयामों को प्रस्तुत किया था जिसका मध्य युग में पतन हो गया था। वे पुनः तेरहवीं सदी के बाद सुसुप्त अवस्था से जागृत अवस्था में लौट आए। प्राचीन यूरोप की प्रेरणा के आधार पर आधुनिक यूरोप के निर्माण को ही आरंभ में पुनर्जागरण का नाम दिया गया।
- यद्यपि इस काल में प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया किंतु यह पुरातन व्यवस्था को ज्यों का त्यों स्थापित करने तक सीमित नहीं था वरन उस में आवश्यक परिवर्तन कर उसे पुनः स्थापित करना था ।प्राचीन अतीत के ज्ञान

Scanned with CamScanner

को नवजीवन देकर नए रूप में प्रस्तुत करना ही पुनर्जागरण है। इसमें मानव पर विशेष बल दिया गया।

- इतिहासकार **लुकस** के अनुसार ' पुनर्जागरण का अर्थ प्राचीन सांस्कृतिक परिवर्तनों से है जो मध्य युग के अंत में प्रारंभ हुए। यह परिवर्तन 1300 ईसवी के उपरांत इटली में हुए और 1600 ईसवी तक समस्त यूरोप में परिलक्षित होने लगे।
- **स्वेन** ने लिखा है मध्ययुग की समाप्ति और आधुनिक युग के प्रारंभ में प्रकट हुए बौद्धिक परिवर्तन को सामूहिक रूप से पुनर्जागरण कहा जाता है।
- **डेविस** का कहना है कि पुनर्जागरण का अर्थ है- स्वतंत्रता की चाह और स्वतंत्र विचारों का पुनर्जन्म है जिन्हें मध्य युग के धार्मिक अधिकारियों ने कैद कर लिया था।

इस तरह से पुनर्जागरण के कुछ खास पहलू सामने आते है जो निम्नवत है-

1. पुनर्जागरण ने केवल सांस्कृतिक क्षेत्र को ही नहीं बल्कि अन्य बौद्धिक क्षेत्रों में भी परिवर्तन लाया,
2. यह कोई अचानक घटित घटना नहीं थी बल्कि एक दीर्घकालीन प्रक्रिया का परिणाम था ,
3. पुनर्जागरण कोई राजनीतिक अथवा धार्मिक आंदोलन न होकर मानव की एक विशिष्ट चेतना थी,

Scanned with CamScanner

4. इसका आरंभ इटली में हुआ और यूरोपीय देशों में 1300 ई. से लेकर 1600 ईसवी तक यह परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रही।

पुनर्जागरण के कारण:

1.धर्म युद्ध - 11वीं से 13 वीं सदी के मध्य अपने पवित्र तीर्थ स्थल यरुशलम को लेकर ईसाई धर्म और मुसलमानों के बीच हुए धर्म युद्धों के बौद्धिक सामाजिक और आर्थिक परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण हुए। धर्म युद्ध के कारण यूरोप वासियों को पूर्व के विद्वानों के साथ संपर्क में आने का मौका मिला जिससे उन्हें पूर्वी देशों की तर्क शक्ति, प्रयोग पद्धति तथा वैज्ञानिक खोजों की जानकारी मिली। अरस्तु के वैज्ञानिक ग्रंथ, अरबी अंक, बीजगणित ,कागज पश्चिम यूरोप में धर्म युद्ध के माध्यम से पहुंचे। यूरोपीय लोगों का मानसिक क्षितिज ऊंचा उठा और वे भी अन्य लोगों की तरह नए ज्ञान- विज्ञान की खोज में लग गए। इतिहासकार **स्वेन** ने धर्म युद्ध के इस प्रभाव को पुनर्जागरण के विकास में स्वीकार किया है।

2. **सामंतवाद का पतन** - धर्म युद्ध ने यूरोप के सामंती व्यवस्था पर चोट कर उसके पतन के मार्ग को प्रशस्त किया।

Scanned with CamScanner

3. **व्यापार वाणिज्य का विकास :** सामंतवाद के पतन के अंतिम चरण में यूरोप में व्यापारियों का वर्ग पैदा हुआ जिसके नेतृत्व में विभिन्न देशों से व्यापार किया जाने लगा। व्यापार के विकास ने पुनर्जागरण की भावना को निम्न रूप से प्रभावित किया-

यूरोपीय व्यापारी व्यापार के सिलसिले में नई खोजें होने के बाद दूर-दूर देशों को जाते थे इन देशों के नए विचारों तथा प्रगतिशील तत्वों से यूरोपीय व्यापारी परिचित होने लगे। जब वे अपने देश वापस लौटते थे तब नए नए विचारों को अपने साथ लाते थे।

- व्यापारियों के पास व्यापार के चलते अधिकाधिक धन संग्रह हो गया। इस धन का प्रयोग उन्होंने दो कार्यों में लगाया। विद्यार्जन में तथा विद्वानों को आश्रय देने के लिए। व्यापारियों के प्रश्रय में रखकर विद्वानों ने साहित्य का सृजन करना प्रारंभ किया, विज्ञान के नए आयामों का अन्वेषण करना प्रारंभ किया और ज्ञान की किरणों को बिखेर कर अंधविश्वास के अंधकार का निवारण करने लगे।
- व्यापार ने नगरों(वेनिस , मिलान, फ्लोरेंस आदि) को जन्म दिया। नगरों का वातावरण स्वतंत्र होता है। इस

Scanned with CamScanner

स्वतंत्र वातावरण में नगरों में नए विचारों को पनपने का भी अवसर मिला।

- व्यापारी वर्ग चर्च की कड़ी आलोचना कर उसके महत्व को घटा दिया। चर्च के पादरी सूद लेने को पाप समझते थे, जबकि व्यापारी वर्ग मुनाफा कमाना को पाप नहीं समझते थे। चर्च अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विरोध करता था क्योंकि अंतरराष्ट्रीय देशों के संपर्क में आने से यूरोप के लोग उसकी महत्ता को अस्वीकार करने लगे थे।

To be continued .....

BY:ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor
P.G. Dept.of History
Maharaja College,Ara.

Scanned with CamScanner